विनायक चतुर्थी व्रत कथा PDF

एक दिन भगवान भोलेनाथ स्नान करने के लिए कैलास पर्वत से भोगवती गए। महादेव के जाने के बाद माता पार्वती स्नान करने लगीं और घर में स्नान करते समय उन्होंने अपनी मिट्टी से एक मूर्ति बनाई और मूर्ति को जीवित कर दिया।

मूर्ति को जीवित करने के बाद, देवी पार्वती ने मूर्ति को 'गणेश' नाम दिया। पार्वती ने स्नान करने जाते समय बाला गणेश को मुख्य द्वार पर प्रतीक्षा करने के लिए कहा। माता पार्वती ने कहा कि जब तक मैं स्नान करके न आऊं तब तक किसी को भीतर न आने देना।

भोगवती में स्नान करने के बाद भोलेनाथ अंदर आने लगे, लेकिन बालक रूपी गणेश ने उन्हें द्वार पर ही रोक लिया। भगवान गणेश ने शिव के प्रयासों के बावजूद उन्हें अंदर नहीं जाने दिया। गणेश को रोकने के लिए इसे अपना अपमान समझकर उन्होंने बालक गणेश का सिर धड़ से अलग कर दिया और घर के अंदर चले गए।

जब शिवाजी ने घर में प्रवेश किया तो वे बहुत क्रोधित अवस्था में थे। उस समय, देवी पार्वती को भोजन देर से होने के कारण गुस्सा आया और उन्होंने दो थाली में भोजन परोसने का अनुरोध किया। शिव ने लगाया हाथी के बच्चे का सिर - दो थाल देखकर शिवजी ने उससे पूछा, दूसरी थाली किसकी है? तब पार्वती ने उत्तर दिया कि दूसरी थाली गणेश के लिए है, जो पुत्र द्वार पर प्रतीक्षा करेगा। तब भगवान शिव ने देवी पार्वती से कहा कि मैंने क्रोध के कारण इसका सिर धड़ से अलग कर दिया है।

यह सुनकर पार्वती दुखी हो गईं और विलाप करने लगीं। भोलेनाथ ने उन्हें अपने पुत्र गणेश का सिर जोड़कर उन्हें पुनर्जीवित करने के लिए मजबूर किया। तब महादेव ने हाथी के बच्चे का सिर काट कर गणेश की सूंड से जोड़ दिया। अपने पुत्र को फिर से जीवित देखकर माता पार्वती बहुत प्रसन्न हुईं। और जो व्यक्ति सच्चे दिल से भगवान गणेश की आराधना करता है उसकी सभी मनोकामना पूर्ण होती है बोलिए श्री गणेश महाराज की जय।

pdfinbox.com